युवाओं के सपने को पंख लगा रही उद्यमी ऋण योजना

68,000

से अधिक युवाओं को अब तक दिया जा चुका ऋण

जासं, लखनऊ : सपने वो नहीं होते, जो आप नींद में देखते हैं, सपने वो होते हैं जो आपको सोने नहीं देते।... पूर्व राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम की इन्हीं पंक्तियों पर खुद को साधते लखनऊ के विजय पांडेय, शशांक चौरसिया और तूबा सिद्दीकी सफल युवा उद्यमियों की पंक्ति में खड़े हैं। योगी आदित्यनाथ के एक ट्रिलियन अर्थव्यवस्था की मंजिल में सहभाग के लिए कदमताल कर रहे हैं। विजय कामर्स, शशांक फार्मेसी और तूबा बायोटेक्नोलाजी से ग्रेजुएट हैं। बिजनेस की दुनिया में कदम रखने वाले इन युवाओं के पास संघर्ष की गाथा है और उपलब्धियों की थाती भी।

तूबा सिद्दीकी

बायोटेक्नोलाजी का कोर्स पूरा करने के बाद एक निजी कंपनी में नौकरी शुरू की, लेकन मन नहीं माना। क्योंकि अपना व्यवसाय शुरू करना चाहती थी। नौकरी छोड़ी तो परिवारजन नाराज हुए। व्यवसाय करना चाहती थी, लेकिन आर्थिक संकट रोड़ा बन रहा था। पिताजी सरकारी सेवा में जरूर हैं, लेकिन सीमित वेतन में बड़े परिवार का जीवन-यापन भी करना था। इसी बीच मुख्यमंत्री युवा उद्यमी ऋण योजना के बारे में जानकारी मिली। आनलाइन आवेदन किया और 15 दिन में पांच लाख रुपये मिल गए।वर्ष 2023 में कंपनी की नींव रखी। डिजिटल प्लेटफार्म पर स्किन केयर प्रोडक्ट का व्यवसाय शुरू किया। अभी दो साल बीता है और मेरी कंपनी की सालाना आय करीब 45 लाख रुपये पहुंच गई है। छह लोगों को रोजगार भी मुहैया करा रही हूं।

सीतापुर के अमरदीप सिंह ने बताया कि उन्होंने योजना के तहत ऋण लेकर फिजियोथेरेपी केंद्र खोला है। अब उनके पास चार लोग काम कर रहे हैं। कानपुर की प्रभनूर कौर ने बताया कि योजना के बारे में पता चला तो संबंधित अधिकारियों से संपर्क किया। उन्होंने 4.25 लाख रुपये का ऋण लेकर बेकरी स्टूडियो शुरू किया। अब उन्हें 'केक क्वीन' के रूप में पहचान मिल रही है।

विजय पांडेय

परिवारजन की इच्छा थी कि बिजिनेस की पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी करूं, लेकिन मैं अपना काम शुरू करना चाहता था। पिछले साल जनवरी में सीएम युवा उद्यमी ऋण की मदद से लकड़ी के खिलौने का व्यवसाय शुरू किया। एक वर्ष में आय दो गुणा तक बढ़ गई। हमने पांच लोगों को रोजगार भी दिया है। अभी गोरखपुर, कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी तक खिलौने जा रहे हैं। अगले दो वर्षों में इसे यूपी मध्य और पूर्वी जिलों तक पहुंचाना है। देखिए, आपको पहले खुद को परखना होगा। मतलब, पहले आप तय कीजिए कि करना क्या है। बाजार को जांचकर आप किस्मत आजमाएंगे तो सफलता मिलनी तय है। हौसला रखिए और कदम बढ़ाते जाइए।

शशांक चौरसिया

फार्मेसी की पढ़ाई पूरी करने के बाद निजी कंपनी में छह माह नौकरी की, लेकिन दिमाग में हमेशा फोटोग्राफी का जुनून रहता था। लिहाजा, नौकरी छोड़ने का फैसला किया। अपना स्टूडियो खोलना चाहता था, लेकिन कड़ी मशक्कत के बाद परिवार से सिर्फ तीन लाख रुपये मिले। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी ऋण से पांच लाख मिले तो जैसे लगा कि अपन सपना पूरा हो जाएगा। पिछले साल अप्रैल में एक स्टूडियो से शुरुआत की, जिसकी संख्या अब तीन हो गई है। अगले साल तक कानपुर व प्रयागराज में भी स्टूडियो शुरू करने की तैयारी है। मैं चाहता हूं कि मेरा स्टूडियो ब्रांड के तौर पर जाना जाए, इसके लिए प्रयास जारी है।